Result Mitra Daily Magazine

उस्ताद जाकिर हुसैन

❖ चर्चा में क्यों ?

- हाल ही में भारत के मशहूर तबला वादक उस्ताद जाकिर हुसैन का 15 दिसंबर को 73 वर्ष की उम्र में अमेरिका के सेन फ्रांसिस्को के एक अस्पताल में निधन हो गया।
- दुनियाभर में "तबला वादन" को शास्त्रीय संगीत के रूप में पहचान दिलाने वाले जाकिर हुसैन की मौत एक दुर्लभ बीमारी "इंडियोपैथिक पल्मोनरी फाइब्रोसिस" से हुई।
- जाकिर हुसैन ने तबला वादन के साथ-साथ संगीतकार, ताल वादक, संगीत निर्माता तथा फिल्म अभिनेता के रूप में काफी प्रसिद्धि हासिल की।

❖ जीवनी :

- जाकिर हुसैन जिनका पूरा नाम जाकिर अल्लारखा कुरैशी था, का जन्म 9 मार्च 1951 को मुंबई (महाराष्ट्र) में हुआ था।
- उनके पिता अल्ला रक्खा कुरैशी (1919–2000) भी एक प्रसिद्ध तबला वादक थे।
- जाकिर हुसैन की पढ़ाई मुंबई के सेंट जेवियर्स कॉलेज में हुई।
- जाकिर हुसैन को संगीत की शिक्षा अपने पिता अल्ला रक्खा कुरैशी से मिली।

- जाकिर हुसैन की शादी अमेरिकी नृत्यांगना और लेखिका अंतोनिया मिन्ने से हुई।
- जाकिर हुसैन की दो पुत्रियां है, जो कला एवं संगीत के क्षेत्र से जुड़ी है।

❖ तबला वादक के रूप में :

- जाकिर हुसैन ने "तबला वादन" को अपने पिता अल्ला रक्खा कुरैशी से सीखा, जो एक प्रसिद्ध तबला वादक थे।
- अपने पिता अल्ला रक्खा का "तबला वादन" ने जाकिर हुसैन के शुरुआती जीवन पर गहरा प्रभाव डाला।
- जाकिर हुसैन ने 7 वर्ष की उम्र में ही संगीत कार्यक्रम में भाग लेना शुरू किया एवं 12 वर्ष की उम्र में ही कॉन्सर्ट करना शुरू कर दिया।
- 22 वर्ष की उम्र में वर्ष 1973 में जाकिर हुसैन ने अपना पहला एल्बम "लिविंग इन द मैटेरियल वर्ल्ड" लॉन्च किया।
- वर्ष 1973 से वर्ष 2007 में जाकिर हुसैन ने विभिन्न अंतरराष्ट्रीय समारोहों में अपना योगदान दिया।
- जाकिर हुसैन को अक्सर तबले को अंतरराष्ट्रीय स्तर पर ऊंचा दर्जा दिलाने का श्रेय जाता है।
- जाकिर हुसैन ने अपनी तबला वादन के लिए अपने पिता उस्ताद अल्ला रक्खा और पंडित किशन महाराज को श्रेय दिया।
- जाकिर हुसैन तबला वादन के पंजाब घराने से संबंधित थे, जिसमें उन्हें अलग-अलग तरीके से तबला बजाने के लिए प्रशिक्षित किया गया।
- 1973 में पहली बार जाकिर हुसैन ने अंतरराष्ट्रीय मंच पर अंग्रेज गिटारवादक जॉन मैकलॉन्घलिन, वायलिन वादक एल शंकर और तालवादक टीएच चिक्कू के साथ मिलकर तबला वादन को शास्त्रीय संगीत और जैज़ के तत्वों को मिश्रण के रूप में पेश करके अंतरराष्ट्रीय उपलब्धि प्रदान की।

❖ सम्मान और पुरस्कार :

- 37 वर्ष की अवस्था में वर्ष 1988 को जाकिर हुसैन को "पद्मश्री" पुरस्कार से सम्मानित किया गया।
- वर्ष 2002 में जाकिर हुसैन को संगीत के क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान के लिए "पद्म भूषण" पुरस्कार से सम्मानित किया गया तथा वर्ष 2023 में उन्हें "पद्म विभूषण" से भी सम्मानित किया गया।
- संगीत के क्षेत्र में दुनिया का सबसे बड़ा "ग्रैमी पुरस्कार" से उन्हें वर्ष 1992 में "द प्लेनेट ड्रम" और 2009 में "ग्लोबल ड्रम प्रोजेक्ट" के लिए सम्मानित किया गया।

- वर्ष 2024 के 66वें ग्रैमी पुरस्कार समारोह के दौरान उन्हें दो और ग्रैमी पुरस्कार से सम्मानित किया गया।
- वर्ष 2016 में पूर्व अमेरिकी राष्ट्रपति बराक ओबामा ने जाकिर हुसैन को व्हाइट हाउस में आयोजित होने वाले "ऑल–स्टार ग्लोबल कॉन्सर्ट" में भाग लेने के लिए आमंत्रित किया गया एवं इसमें भाग लेने वाले वे भारत के पहले संगीतकार बने।

❖ अभिनय :

- जाकिर हुसैन को तबला वादन के साथ-साथ अभिनय में भी काफी दिलचस्पी थी।
- वर्ष 1983 में जाकिर हुसैन ने "हिट एंड डस्ट" नामक फिल्म में अपना पदार्पण किया।
- उसके बाद वर्ष 1988 में "द परफेक्ट मर्डर", 1992 में "मिस बैंटीज चिल्ड्रर्स" और वर्ष 1998 में "साज" फिल्म में भी महत्वपूर्ण योगदान दिया।
- "साज" नामक फिल्म में जाकिर हुसैन ने मुख्य अभिनेता के रूप में काम किया, जिनमें उनकी अभिनेत्री शबाना आज़मी थी।

❖ इडियोपेथिक पलमोनरी फाइब्रोसिस (IPF) :

- इडियोपेथिक पलमोनरी फाइब्रोसिस (IPF) एक दीर्घकालिक बीमारी है, जो फेफड़ों के वायुकोषों के उत्तकों को प्रभावित करती है।
- IPF बीमारी की मुख्य वजह फेफड़ों के उत्तकों का मोटा और कठोर होने के कारण होता है।
- IPF के सबसे आम लक्षणों में सांस लेने में तकलीफ और खांसी है।
- IPF के कारण उम्र बढ़ने के साथ फेफड़ों के जरिए खून में ऑक्सीजन की कमी होने लगती है, जो अंततः मौत का भी कारण बन सकती है।